सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 157

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 35-36
अगस्त – 2017

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

गुरूप्रसाद प्रकाशन

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधुभगिनियों से

'गुरुप्रसाद' के प्रकाशन का सोहला (celebration) अगस्त 1988 सभी भक्तभाविकों के जीवन में सुवर्ण अक्षर से लिखने जैसा दिन है, उसका महत्व क्या है और नाथपंथ की परंपरा से ये तत्वज्ञान कैसे मिलता जुलता है इसमे हमें यह बताया गया है इस प्रकार मूल तत्व वैसे ही रखकर आचरण करने का मार्ग दर्शन जो किया गया है वह आज और आगे आने वाले काल में कैसे सहजता से हम कर सकेंगे यह बताया है।

उन्नीस सौ बीस शतक में मनुष्य, जीवन में सभी स्तरों पर बहुत बदला हुआ है ऐसा हम देखते है, राहणीमान (style of living) नौकरी धंधा, खान–पान, प्रवास, मनोरंजन के तरीके ये सभी में बहुत सारा बदलाव हुआ है यह दिखता है लेकिन पारमार्थ और पारमार्थिक का आप पर वैसा विकास या बदलाव हुआ है ऐसा देखने को नहीं मिलता है, जो मनुष्य एक जमाने में पैदल चलता था आज उसे कम समय में इच्छित जगह जाने के लिए नए बोध से नए साधन आ गए है उसके लिए energy की जरूरत है उस energy की निर्मिति कैसे करें ये समझने के लिए शास्त्रज्ञ ने अपना जीवन शहीद किया है ऐसा हम देखते है। इसलिए पारमार्थिक प्रवास में ही जो साध्य करना है वह सुलभता से और कम समय में प्राप्त करने का साधन निर्माण करना होगा तो उसके लिए भी energy की जरूरत है वह energy किस प्रकार की होनी चाहिए उसकी जानकारी होना जरूरी है और उस energy की निर्मिति करने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करे ऐसा सिद्ध हुआ साधक उसकी जरूरत है।

शास्त्र की परंपरानुसार 'नर' का 'नारायण' बनने के लिए अनेक जन्म सेवा में व्यतीत कराने पड़ते है ऐसा बताया गया है लेकिन वही अवस्था एक जन्म में (प्राप्त जन्म में) कैसे प्राप्त कर सकें और मानवताधर्म से यह अवस्था कैसे सारे समाज को सहजता से प्राप्त कराई जायेगी ये विचार प्रथमतः वं. दादाजी ने दुनिया के सामने रखा ऐसे तत्वज्ञान की फलश्रुति यानी "गुरुप्रसाद" ये ग्रंथ है।

इस ग्रंथ में जो तत्व प्रणाली बताई है इसका उगम वंदनीय दादाजी

के दो गुरुस्थान श्री तेली महाराज और श्री भैरवनाथ उन से है उस तत्व ज्ञान का अभ्यास 'शिकून जगाला आगतावूनकोस, तागलेली आग विसव' ये एक वाक्य से है, आगे चलकर दुनिया को क्या देना है उसके बारे में चिंतन वं. दादाजी के जीवन में उनके बचपन से यानी 12 साल की उम्र से ही शुरू हुआ और बाद में श्री भैरवनाथ ने सिखाई हुई ॐकार साधना की मुद्दत हुई उस समय भैरवनाथ जी ने दो प्रमुख चीज बताई –

'भविष्य में ॐकार साधना और श्री साईनाथ महाराज की कृपा' इसके सिवा आगे की दुनिया को तरणोपाय (चारा) नहीं है ये बताया उसको पचास साल हुए इस संसार में सहपरिस्थिति अनुसार समाज कार्य करने वाले बहुत लोग है लेकिन आगे आने वाले समय के लिए आवश्यक ऐसी साधन सिद्धता और उपाय योजना पचास साल पहले करना जिससे ये कार्य ईश्वर प्रेणित है उसका एहसास होता है।

12 साल की उम्र और उसके आगे चार–पाँच साल इन दोनों गुरु स्थानों का सानिध्य वं. दादाजी को प्राप्त हुआ। ये चार–पाँच साल की सेवा से आगे का सब कार्य है क्योंकि उस चार पाँच साल के बाद सातारा से पूना में आने के बाद और आगे चलकर कार्य की स्थापना होने के समय तक लगभग 12 साल वं. दादाजी ने किस प्रकार से गुजारे होंगे उसका अंदाजा हम नहीं कर सकते क्योंकि भैरवनाथ जी ने कहा था कि 'बताई गई ॐकार साधना करते रहना, लेकिन गुरु की खोज में मत जाना क्योंकि तेरे गुरु इस दुनिया में पैदा नहीं हुए है इसलिए साधना करते रहना आगे चलकर गुरु ही स्वयं तुझे ढूँढ़ते हुए आयेंगे' इस वचन अनुसार आगे चलकर श्री साईनाथ महाराज और पं. पू. हाजी मलंग बाबा उनके मार्ग दर्शन से नाथपंथ और सूफी पंथ के आलौकिक विभूतियों का मार्गदर्शन और कृपा का लाभ होकर ये कार्य साकार हुआ, यानी यह जो 12 साल का समय जो एकांत में गुरु के तत्वज्ञान के चिंतन में व्यतीत हुआ और उससे दुनिया को भविष्य में क्या देना है और वह भी आसान तरीके से कैसे देना है उसकी निश्चिंतता हो गई।

कार्यारंभ में वं. दादाजी ने जो विचारसरणी (Philosophy) रखी कि जो 'साध्य है वह प्राप्त करने के लिए मुझे कष्ट हुए तो चलेगा लेकिन भक्तों को कष्ट नहीं होना चाहिए' उसके साथ जो मुझे प्राप्त हुआ है वह बहुत सुलभता से सबको प्राप्त होना चाहिए यानी पूरे कुटुँब से एक व्यक्ति मार्गदर्शनार्थ आए तो उसके माध्यम से ही संपूर्ण कुटुँब का उद्धार होना चाहिए। वंशदोष, कर्मदोष इत्यादि दोषों के परिमार्जन के लिए त्रीस्थ की यात्रा, यज्ञयाग, वाजपेययज्ञ ये करने की जरूरत नहीं केवल कम से कम सेवा और केवल सवा रूपया दान इससे वो आदमी दोष मुक्त होना चाहिए और देवदेवताओं के कृपा प्राप्ति के लिए धार्मिक विधि जैसे नवचंडी, शतचंडी ऐसे होम हवन करने के बजाए श्रीफल पूजन, चुनरी उससे ही देवता संतुष्ट होने चाहिए। यानी निराकरण ऐसा होना चाहिए कि समाज के सभी स्तरों के लोग कर सके, ऐसा कार्य आज हजारो कुटुँबों में हो रहा है यानी यह देखा जा सकता है, उसका अभ्यास किया और उस चालीस वर्ष के स्वानुभव से 'गुरुप्रसाद' लिखा गया।

विश्वशक्ति यह भिन्न भिन्न स्तर पर और भिन्न भिन्न स्वरूप में कार्य करती है उसमें से कौन से कंपन धारण करना और भक्तों को उसका लाभ कराना यह साधक को निर्णय करना होता है ईश्वर ऐसे साधको को हर युग में भेजता है उन साधकों का कर्त्तव्य यह है कि खुद मध्यस्थ बनकर ईश्वर को आज के जमाने के लिए क्या देना है और वह, 'मैं मेरे खुद का मोक्ष–मुक्ति का लोभ नहीं रखते हुए, कैसे दे सकू यह विचार करने के लिए मुझे इहजन्म व्यतीत करना है' ऐसा निश्चय करना चाहिए लेकिन ऐसा विचार कोई भी साधक नहीं करता लेकिन वही परंपरा आगे चलाता हुआ साधक नजर आता है क्योंकि दुनिया को कुछ नया देना है तो उसके लिए परिश्रम है और वो परिश्रम भी सभी प्रकार के हैं सिद्धता करते समय अनेक प्रकार के बंधन, स्थल, काल, समय परत्वे होती है भक्तभाविक जो ऐहिक अर्पण करते है उससे दूर रहना पड़ता है और जो सिद्धता करनी है वह भक्तों के साथ वास्तव्य करके करनी होती है उसके अलावा 'दुनिया से कुछ अलग कर रहा है' ऐसे जनपवाद का सामना करना पड़ता है इसलिए उत्तम जन्म प्राप्त होकर भी बहुसंख्य साधक यह मार्ग नहीं अनुसरते है और एक तरह से प्राप्त हुआ दुर्लभ जन्म व्यर्थ करते है वं. दादाजी ने 12 साल की उम्र से 'दुनिया क्या कहती है इसके बदले ईश्वर क्या कहता है उसका विचार किया' और आज भी कर रहे है इसलिए ऐसा अलौकिक कार्य हमारे सामने है इसके अलावा जो कुछ सिद्ध साधना समय समय पर प्राप्त की उसका विनियोग दुनिया को सहजता से आत्मसात होगा यह भी साधक को देखना जरूरी है उसके लिए वं. दादाजी ने खुद का देह, यही एक laboratory बनाई और जिस साधन

सिद्धता की आवश्यकता है उसके मुताबिक आवश्यक ऐसी शक्ति को आवाहन करना, उसको खुद के देह में धारण करना उसके कार्य पर ध्यान रखना और अगर योग्य होगी तो ही भक्तों के माध्यमों में प्रवाहित करना ऐसा कार्य किया है । शक्तिपीठ स्थापन हुआ ऐसा हम कहते है लेकिन उचित अर्थ से शक्तिपीठ पिछले नवरात्र में स्थापन हुआ (उस नवरात्र में नारायणी शक्ति शक्तिपीठ में स्थापित हुआ) ऐसी प्रचंड त्रिगुणात्मक शक्ति आवाहन करते समय वं. दादाजी के देह पर बड़ा आघात हुआ जीते जी मृत्यु को आवाहन और बाद में लगभग साल भर उनकी स्थिति बहुत कठिन थी ये हम जानते है लेकिन ऐसा होते हुए भी इस शक्ति को उन्होंने अपने शरीर में स्थान दिया उसकी वजह से तबियत में होने वाले फेरबदल किसी भी प्रकार की शिकायत (त्रागा) न करते हुए शांतता से सहन किए उसे पहले ही भक्तों को त्रिगुणात्मक शक्ति की तीन प्रतिमा दी गई थी। केवल भारत में ही नहीं बल्कि परदेश यानी ऑस्ट्रेलिया से साऊथ अमेरिका, पेरू, अर्जेंटिना तक सभी धर्मियों को प्रतिमा दी गई और भिन्न भिन्न देश, धर्मपरत्वे भिन्न भिन्न तरह की पूजा पद्धति से ये प्रतिमा का लाभ सभी भक्तों को हो रहा है यह अवलोकन किया और बाद में ही यह त्रिगुणात्मक शक्ति उसके लिए निर्माण किए गए शक्तिपीठ में धारण की उस शक्ति के विश्वस्वरूप का अनुभव किया ये कार्य के समय एक तरफ प्रखर शक्ति और दूसरी तरफ ध्यान में आएगी ऐसी धीरे धीरे विकसित होने वाली भक्तों की देहिक माध्यम में उनका समन्वय वं. दादाजी ने कैसा संभाला होगा जरा कल्पना करो।

अभी कार्यार्थ जो चल रहा है उसके दो उद्देश्य थे लोगों को भक्तों को देवतार्जन सुलभ मार्ग से उपलब्ध करा के उनको प्रापंचिक और पारमार्थिक ऐसे दोनों लाभ करा देना और 2) यह कार्य केवल एक व्यक्ति तक मर्यादित न रहकर निरंतर स्वरूप में अस्तित्व में रहने के लिए सेवक तैयार करना ये दो उद्देश्य सफल हुए है ऐसा हम आज देखते है पहला उद्देश्य जो चालीस साल के कार्य में सफल हुआ ऐसा देखा और वं. दादा जी ने कामकाज बंद करके आगे के महत्व की साधन सिद्धता शुरू की उस समय भक्तों को प्रापंचिक मार्गदर्शन करने के लिए सेवक नियुक्त किए आज लगभग 25 साल से समिति के सभी केंद्रो पर सेवक माध्यम से कार्य हो रहा है यह हम देखते है। यानी गुरुप्रसाद में जो तत्वज्ञान लिखा है जो विचार प्रस्तुत किए है उनकी सिद्धता कार्य शुरू करने से पहले ही होते हुए भी उस समय यह ग्रंथ नहीं लिखा बल्कि उस सिद्धता के अनुसार भक्तों का जीवन साकार हुआ है ऐसे अनेक सालों में देखने के बाद यह तत्वज्ञान शब्दरूप में आपके सामने रखा है इसलिए इसके हर एक वाक्य के पीछे प्रखर आत्मविश्वास है।

श्री साई आध्यात्मिक समिति की कार्यपद्धति का अगर अभ्यास करें तो मानवी जीवन का कितना सरवोल (deeply) अभ्यास उसके पीछे है यह महसूस होगा। प्राप्त जीवन की कठिनाईयों का निवारण करने का साधन यानी यह मार्ग है ऐसी विचार धारा पिछले कुछ दिनों से दूर हो रही है वास्तव में मनुष्य को प्रपंच और परमार्थ दोनों की आवश्यकता है क्योंकि प्रपंच की सुख प्राप्ति का समाधान परमार्थ में है हमारी कार्यपद्धति में ये दोनों का लाभ हमे सहजता से और बिना समझे होता रहता है उसके बारे में 'गुरुप्रसाद' में लिखा है बाह्य जगत में मुसीबतों के निवारणार्थ करने के उपाय ज्योतिष विषय पुस्तकों में होते है लेकिन उसमें तत्वज्ञान नहीं होता इसलिए मनुष्य confused हो जाता है यह वैचारिक confusion दूर करने का सामर्थ्य 'गुरुप्रसाद' में है।

ऐसा ये अलौकिक अमूल्य ग्रंथ जिसमें वं. दादाजी के पिछले कई जन्मों की पुण्याई और इहजन्म के चालीस साल किया हुआ कार्य उसका सार है यह ग्रंथ 325 पेज का है और उसमें आज आवश्यक ऐसा मार्गदर्शन और तत्वज्ञान है और व चालीस साल के लोककल्याण के कार्य से प्राप्त हुआ है वह स्वानुभाव पर आधिष्ठित है इसलिए इसके आगे और कुछ तत्वज्ञान होगा ऐसा बोध लेने की आवश्यकता नहीं है

जब तक मानवीय जीवन अच्छी तरह से गुजरता रहता है तब तक कुछ विचार करने की जरूरत नहीं होती कठिनाई आई और खुद के प्रयत्नों से छुटकारा नहीं प्राप्त हुआ कि मनुष्य confused हो जाता है और पहले ज्योतिषशास्त्र और बाद में देवदैविक मार्ग का अनुसरण करता है यहाँ पर उसे निश्चित मार्गदर्शन नहीं मिलता क्योंकि परमार्थ में इतनी सारी ग्रंथ निर्मिति है कि उससे क्या पढ़ना और क्या follow करना यह समझ में नहीं आता है वह और confuse हो जाता है ऐसे समय पर निश्चित ऐसी दिशा बताने वाला मार्गदर्शक जिसकी कमतरता आज तक समाज में भी वह 'गुरुप्रसाद' ग्रंथ से दूर होगी। कौन सा धर्माचरण करने से अपने जीवन में जो

कमतरता है वह दूर होगी और हम समाधान प्राप्त कर सकेंगे उतना ही मार्गदर्शन ये ग्रंथ में है कम भी नहीं ज्यादा भी नहीं और इससे भी बढ़कर ये मार्गदर्शन को एक विशिष्ट धर्म के लिए ही मान्य है ऐसा नहीं, इसलिए यह 'गुरुप्रसाद' यह 'ग्रंथराज' है।

ऐसा ये ग्रंथ 325 पेज का होते हुए भी जब उसको लिखने का काम लगभग दस साल पहले राम नवमी को शुरु हुआ तब केवल इक्कीस दिन में पूर्ण हुआ। उसको लिखते समय एक ही साल बाद में बदली करना नहीं पड़ा या एक भी वाक्य फिर से पढ़ने के बाद बदली करना नहीं पड़ा या रेफरेंस के लिए कौन सा धार्मिक ग्रंथ तममित नहीं किया। सहजता से बहती हुई गंगा की धारा जैसे वं. दादाजी के मुख से शब्दों का प्रवाह अवतीर्ण होता रहा वैसा लिखित स्वरूप में साकार होते गया यह इस समय बताना उचित और आवश्यक है। इसका मतलब यह है कि 'गुरुप्रसाद' यह ग्रंथ 'अपौरूषेय' है।

महर्षि व्यास उन्होंने लोक कल्याणार्थ इस प्रकार ही वेदों की निर्मिती की उसे कई हजार साल हुए इतना ज्ञान दुनिया के सामने रखकर अंत में उन्होंने 'नेती नेती' ऐसा कहा उसका अर्थ ऐसा है कि आगे जमाने में आवश्यक ऐसा ग्रंथ निर्मिती उस वक्त की समाज की मार्गदर्शक ऐसा कोई अलौकिक सत्पुरूष उस जमाने में करेगा 'गुरुप्रसाद' यह आज के जमाने के लिए 'वेद' ही है श्री व्यास ने वेदों का उच्चार किया और श्री गणेश जी ने लिख के इसका अर्थ क्या है?तो श्री गणेश यानी देवों का अधिपति सर्व देवों ने उनका माध्यम इसलिए उस ग्रंथ निर्मिती को (वेदों को) मान्यता दी गुरुप्रसाद की निर्मिती होकर 30 साल गुजर गए उस समय बाद श्री गणेश जी ने वं. दादाजी को आमंत्रित करके उनको शुभाशीर्वाद दिया और अभी ये ग्रंथ का प्रकाशन हो रहा है 11 साल के आठवे महीने की यह अलौकिक घटना है।

इस ग्रंथ प्रकाशन के वर्ष में ही श्री नारायणी प्रतिमा सिद्ध हुई है और आप सबको दी गई है। इस ग्रंथ में 'नर' अवस्था से 'नारायण' अवस्था प्राप्त करने तक का संपूर्ण मार्गदर्शन है और प्राप्त हुई नारायण अवस्था का लाभ पूरे विश्व को होने के लिए ये नारायणी प्रतिमा है।

आज तक दुनिया में निर्माण हुआ कोई भी आध्यात्मिक ग्रंथ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण, या 'नारायण अवस्था' इधर तक आकर रूकता है अपने गुरु वं. दादा 'नारायणी अवस्था' यहाँ रूके नही तो प्राप्त हुई अवस्था का लाभ आगे चलकर कैसा लेना है और दूसरों को कैसा देना है इसका निश्चित मार्गदर्शन उन्होंने अपने सामने रखा है। इहजन्म में देहिक विकास करके कार्यार्थ अगला जन्म लेना यह विचार धारणा ही बाजू में रख कर इहजन्म में ही यह कार्य करना है और अनेक माध्यमों द्वारा करना है ऐसा केवल विचार ही सामने नहीं रखा बल्कि उन्होंने वह विचार साकार करके दिखाया है ऐसे विचार अध्यात्म क्षेत्र में क्रांति करने वाले हैं। कर्म कम करो उससे जन्म कम होंगे ऐसा शास्त्र में बताया गया है लेकिन उसके आगे चलकर वं. दादाजी कहते है कि, 'तुम्हारे जन्म ही कम कर देते है फिर जो कर्म बचेगा वह लोककल्याणार्थ व्यतीत करना' ऐसा तत्वज्ञान आज तक किसी ने पढ़ा नहीं, सुना नहीं, व्यक्त किया नहीं दुनिया के सामने रखा नहीं फिर उसको सिद्ध करना तो दूर की बात अपने कार्य की और अपने सद्गुरु की महती और क्या कहें।

'गुरुप्रसाद' ग्रंथ यह सभी पुण्य विभूतियों के हम मानवों पर रहे हुए अनंत उपकार है, अपने से एक विभूति को उन्होंने इस जगत में अवतीर्ण होने के लिए भेजकर वं. दादाजी के माध्यम से इस कार्य के रूप में अपनी कृपा विभूतियों ने जो जगत कल्याणार्थ साकार की है ''जगाच्या कल्याणा संताच्या विभूति' विभूति यानी रक्षा यानी जगत का कल्याण होने के लिए संत लोगों के अपने जीवन का बलिदान करना पड़ता है वं. दादा जी ने हम भक्तभाविकों के कल्याणार्थ अपना जीवन समर्पित किया है और इस समर्पित जीवन की फलश्रुति यानी यह 'गुरुप्रसाद' रूपी नजराना हमें दिया है उसके अंतर्भूत सामर्थ्य का, सेवा का, प्रेम का, आपुलकी, जिव्हा का, दया और विश्वास का स्मरण हमें सदैव होना जरूरी है और उन्होंने जो योजना की उसके मुताविक हम सभी से लोककल्याण की सेवा साकार हो, ऐसी इस समय श्री सद्गुरु वं. दादाजी उनके चरणों में प्रार्थना।

।। शुभं भवतु।।

एक तुच्छ जन्म जन्म का सेवक,
श्री साईकल्प अध्यात्म संस्था